IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद पीलीभीत के प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन।

पुलकित शर्मा (प्रवक्ता)
महेन्द्र कुमार सिंह (प्राचार्य)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर–पीलीभीत।

सारांश

शिक्षा मानव जीवन का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा मानव जीवन का विकास होता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया है। हमारी भारतीय शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः तीन भागों में विभाजित है– प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर। अतः उच्च स्तर से हमारा तात्पर्य शिक्षा के स्तर का उच्चतम स्तर है। जिसमें गुणवत्ता के लिए बुनियादी एवं प्राथमिक शिक्षा विशेष महत्व रखती है। शिक्षा में बालक की बुनियादी एवं प्राथमिक शिक्षा जितनी मजबूत होगी, उच्च शिक्ष उतनी ही गुणवत्ता पर्ण होगी। प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पूर्ण बनाने के लिए सरकार द्वारा शिक्षा में विशेष प्रकार की योजनाओं को आरम्भ किया गया, जिससे हमारी भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार हो सकें। अतः योजनाओं के क्रियान्यवन के लिए भी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण आदि का भी प्रावधान किया गया, जिसमें शिक्षकों का भी विशेष योगदान रहा। प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता के लिए जितना योगदान सरकार का है, उतना ही शिक्षकों का भी है। क्योंकि सरकार द्वारा शैक्षिक योजनाओं का सिर्फ निर्माण किया जाता है, परन्तु शिक्षक उन्हे संचालित करता है, और उसे अमली जामा पहनाता है। शिक्षक के भरसक प्रयास से ही छात्र उन योजनाओं से लाभान्वित होते हैं।

प्रस्तावना–

किसी भी राष्ट्र के विकसित होने का अर्थ है, उस राष्ट्र की उच्चतम शिक्षा व्यवस्था। क्योकि किसी भी राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा हमारे जीवन का मूल आधार है। शिक्षा द्वारा मानव जीवन का विकास एवं व्यक्तिव का निर्माण होता है, बेसिक शिक्षा को बालक के जीवन का आधार माना जाता है। अतः उच्च शिक्षा को अकार देने में बेसिक शिक्षा विशेष महत्व रखती है, अर्थात उच्च शिक्षा एक इमारत के समान है और इमारत की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है। जितनी मजबूत नींव होगी, उतनी ही मजबूत इमारत होती है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में बालक की बेसिक या बुनियादी शिक्षा जितनी मजबूत होगी, उच्च शिक्षा भी उतनी ही गुणवत्तापूर्ण होगी। मानव जीवन के साथ जितना घनिष्ट सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है उतना माध्यमिक या उच्च शिक्षा का नहीं हैं। इसलिए प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता हेतु सरकार ने कई लोकहित कारी योजनाओं का शुभारम्भ किया, जिसमें 06 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया। प्रदेश के प्राथमिक शिक्षा के स्तर को अधिक से अधिक सुधारने और उसे व्यापक बनाने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार के कुल बजट का 58% भाग प्राथमिक शिक्षा के ऊपर खर्च करने का निर्णय सरकार की इस दिशा में एक क्रांतिकारी पहल का सूचक है। प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना के लिए सरकार द्वारा प्रत्येक डेढ किलो मीटर के दायरे में ऐ प्राथमिक विद्यालय खोलने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस लक्ष्य को वर्तमान सरकार ने पूरा कर लिया है। और ''शिक्षा गारंटी योजना'' के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों के माध्यम से एक किलोमीटर की परिधि

में 6–8 आयु वर्ग के 30 बच्चों की उपलब्धता पर सम शिक्षा गांरटी तथा 6–14 आयु वर्ग के 20 बच्चों की उपलब्धि पर एक वैकल्पिक नवाचार शिक्षा केंद्र की स्थापना का प्रावधान किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

प्रत्येक शोध अध्ययन का कोई न कोई महत्व अवश्य होता है। समस्या के महत्व को देखकर ही उसका चयन किया जाता है। जैसा कि इस अध्ययन के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि इस अध्ययन के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद पीलीभीत के प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन से है, क्योकि शिक्षा जीवन में सवसे अहम होती है। प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा देना चाहते हैं और बेहतर शिक्षा हेतु प्राथमिक शिक्षा का प्रभावशाली होना अत्यंत आवश्यक है। प्राथमिक शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं को संचालित किया जा रहा है। अतः इस अध्ययन द्वारा सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का प्रभाव किस प्रकार छात्र एवं शिक्षकों पर पड़ रहा है? छात्र एवं शिक्षक किस प्रकार योजनाओं से प्रभावित हो रहे हैं? एवं यह योजनाऐं किस तरह से उनके लिए महत्वपूर्ण है? सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का प्रभाव प्राथमिक शिक्षा पर पड़ता है जिससे शिक्षा को बेहतर एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षण के क्षेत्र में अत्यन्त उपयोगी है। क्योकि यह बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का परीक्षण करता है। यह शोध सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की प्रभावशीलता को दर्शाता है और विद्यालयो में चल रही योजनाओं का छात्र एवं शिक्षकों के मध्य प्रभावशीलता को बताता है। साथ ही शिक्षको को चाहिए कि वह छात्रों को विद्यालय सम्बन्धित सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की पूर्ण रूप से जानकारी दें। तथा उन योजनाओं को प्रभावशाली रूप से लागू कर छात्रों को उनसे लाभान्वित करवायें।

अध्ययन का उद्देश्य–

1– बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें छात्रों एवं शिक्षकों का विद्यालय में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन।

2–बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें छात्रों का विद्यालयों में संचालित योजनाओं का प्रभावशीलता का अध्ययन।

3– बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें शिक्षकों का विद्यालय में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं–

अनुसंधान के क्षेत्र में प्रस्तावित समाधान या उत्तर को परिकल्पना कहते है। प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएं निम्न है।

1– बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें छात्रों एवं शिक्षकों का विद्यालयों में संचालित योजना की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नही है।

2– बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाली प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें छात्रों का विद्यालयों में संचालित योजनाओं के प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नही है।

3– बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाली प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों कें शिक्षकों का विद्यालयों में संचालित योजनाओं के प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नही है।

अनुसंधान विधि–

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त प्रदत्त प्रमाणित एवं विश्वसनीय होते हैं तथा उनकी सार्थकता अभीष्ट होती है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के अन्तर्गत पीलीभीत जनपद के बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राएं तथा शिक्षक आते हैं। अतः शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष इसी जनसख्या के लिए मान्य होंगे।

न्यायदर्श चयन एवं न्यायदर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा पीलीभीत जनपद के बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। फिर उन विद्यालयों से 50 छात्रों तथा 50 शिक्षक का चयन किया गया है। जिसमें 25 छात्र और 25 शिक्षक प्राथमिक विद्यालय से हैं और 25 छात्र एवं 25 शिक्षक उच्च प्राथमिक विद्यालय से लिए गए है।

प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध कार्य की पूर्ति हेतु आंकड़ो के संकलन के लिए स्वनिर्मित मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में 15 छात्र दृष्टिकोण से सम्बन्धित प्रश्न 15 शिक्षक दृष्टिकोण से सम्बन्धित प्रश्नों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत प्रश्नावली/उपकरण की कोई समय सीमा नही है। इस उपकरण में प्रत्येक कथन के उत्तर के तीन विकल्प हॉ/नहीं/अनिश्चित दिए गएं है।

सांख्यिकीय प्रविधियां–

प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोध आंकड़ो के विश्लेषण हेतु प्रयोज्यों से प्राप्त पदत्तों का वर्ग अतंराल ज्ञात करके आवृत्ति वितरण सारणी तैयार की गयी, और इसके आधार पर मध्यमान, मानक विचलन की गणना की गयी। प्राप्त आंकड़ो की विश्लेषण तालिकाएँ निम्न लिखित है।

बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्र एवं शिक्षकों के आंकड़ों की तालिका–

तालिका–1

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र	50	39.4	6.50	3.56	अस्वीकृत
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक	50	35.5	4.08		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः 39.4, 35.5 है तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 6.50, 4.80 है, तथा टी–मान 3.56 प्राप्त हुआ। जोकि सार्थक स्तर के मान 1.90 से होती है, अतः कहा जाता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र एवं शिक्षकों में विद्यालय में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र एवं शिक्षकों में विद्यालय में संचालित योजनाओं से पूर्णतः प्रभावित नही हो पाते, जिस कारण वह विद्यालय में संचालित योजनाओं का लाभ नही ले पाते है, जिससे उनकी स्थिति में थोडा अन्तर आता है।

तालिका–2

प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के आकडों की तालिका–

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र	25	39.48	5.70	4.86	अस्वीकृत
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक	25	33.36	2.65		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान क्रमशः 39.38, 33.36 है, तथा उनके मानक विचलन क्रमशः 5.70, 2.65 प्राप्त हुआ है, तथा टी–मान 4.86 प्राप्त हुआ, जोकि सार्थक स्तर 0.05 के मान 2.01 से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों में विद्यालय में संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है। शोधार्थी का मानना है कि इसका कारण यह हो सकता है कि प्राथमिक तथा उच्च विद्यालयों के छात्रों को विद्यालय में संचालित योजनाओं की जानकारी पूर्ण रूप से नही मिल पाती है, जिस कारण उनकी स्थिति में सार्थक अन्तर है।

तालिका–3

प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक के आंकडों का तालिका–

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र	25	39.32	7.34	0.97	अस्वीकृत
प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक	25	37.68	4.23		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः36.32, 37.68 है, तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 7.34, 4.23 प्राप्त हुआ है, तथा टी–मान 0.97 प्राप्त हुआ, जोकि सार्थक स्तर 0.05 के मान 2.01 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है, इस आधार पर कहा जा सकता है कि प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सार्थक अन्तर है। इसका अन्तर यह हो सकता है कि प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं को तनाव के रूप में देखते हैं, तथा शिक्षण के बोझ के कारण वे योजनाओं को प्रभावित नही कर पाते। जिस कारण उनकी स्थिति में अन्तर आता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों की स्थिति में सार्थक अंतर है। इसका कारण यह है कि विद्यायलों में संचालित योजनाओं की जानकारी पूर्ण रूप से छात्रों एवं शिक्षकों को नही मिलती है। जिस कारण छात्र सरकार द्वारा चल रही योजनाओं का पूर्ण रूप से लाभ नही ले पाते। अगर बात की जाये शिक्षको की तो शिक्षकों का कार्य शिक्षण तक ही सीमित नही है, क्योकि शिक्षण के अलावा अन्य कार्य शिक्षकों को यथा –जनगणना, चुनाव, सर्वे आदि के कार्य भी दिए जाते है। जिस करण शिक्षक अपना विद्यालय सम्बन्धित कार्य पूर्ण रूप से करने से अछूते रहे जाते है। लेकिन अगर उनके इन कार्यो के बोझ को कम कर दिया जाये तथा शिक्षकों को शिक्षण कार्य ही उन्हे करने दिया जाये। जिससे वह अपना शिक्षण कार्य पूर्ण रूप से कर सकेंगे तथा विद्यालय सम्बन्धित कार्य भी पूर्ण रूप से कर सकेंगे। जिससे वह सरकार द्वारा जो योजनाएं लागू की गई है, उन्हे सुचारू रूप से लागू कर छात्रों को उनके प्रति जागरूक कर सकेंगे। जिससे वह लाभान्वित होंगे और जो भी योजनाएं हैं वह प्रभावशाली रूप से कार्य कर सकेंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- सिंह गया एवं राय अनिल कुमार (2015), शैक्षिक अनुसंधान की विधिया, आर0 लाल बुक डिपो (मेरठ)।
- आर्य, पुष्पेश (2006), उत्तर प्रदेश में राजकीय स्पर्श विद्यालय में जमा–पाठयक्रम उपलब्धि स्तर का अध्ययन,
- एम0एड0स्पेशल वी0आई0, लघु शोध (अप्रकाशित), जे0आर0एच0 यूनिवर्सिटी, चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)।
- बुच, एम0पी0 (एडि1992) सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, न्यू देहली, एन0सी0ई0आर0टी0।
- पाण्डेय लाख नारायण (2005), छात्रों एवं छात्रों एवं अभिभावकों का अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के प्रति झुकाव का अध्ययन।